राजस्थान संस्कृत अकादमी, कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार

संस्कृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

एवं

देव एस.बी.एन. ट्रस्ट, जयपुर

के संयुक्त तत्त्वावधान में

अखिल भारतीय महाकवि माघ महोत्सव के उपलक्ष्य में

माघ पूर्णिमा के शुभावसर पर आयोजित

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

संस्कृत वाङ्मय में राजधर्म और सुशासन

(भौतिक एवं अन्तर्जाल माध्यम)

में सादर आमंत्रित करते हैं।

दिनांक - 05-06, फरवरी, 2023

स्थान

बप्पारावल सभागार, स्वर्ण जयन्ती अतिथि गृह,

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

विश्वविद्यालय के बारे में

राजस्थान के दक्षिणी भाग में शक्ति, भक्ति, शौर्य एवं कीर्ति की पुण्यभूमि मेवाड़धरा उदयपुर में 1962 में स्थापित मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय प्रदेश में उच्चशिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में योजनाबद्ध विकास और विस्तार के लिए अनवरत संकल्पित तथा गतिमान है। बहुसंकायात्मक इस राज्यीय विश्वविद्यालय में 08 संकाय तथा 34 विभाग संचालित हैं। आदिवासी जनजातीय बहुल इस क्षेत्र के चार जिलों के लगभग 2 लाख विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हैं। अरावली की गोद में स्थापित यह विश्वविद्यालय मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, प्रबन्ध, वाणिज्य, विधि, शिक्षा आदि अनेक विषयानुशासनों में अद्यतन पाठ्यक्रम एवं उच्चस्तरीय आधारभूत सुविधाओं से सुसज्जित है। यहाँ के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने समाज और देश के बहुआयामी विकास की दिशा में अनुकरणीय योगदान दिया है।

संस्कृत विभाग के बारे में

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठास्वरूपा संस्कृत भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु संस्कृत विभाग की स्थापना की गई। सन् 1966 में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया। वर्तमान में विभाग में स्नातक, स्नातक ऑनर्स, स्नातकोत्तर एवं पीएच. डी. पाठ्यक्रम संचालित हैं। आचार्य विष्णुराम नागर, आचार्य मूलचन्द पाठक, आचार्य रामचन्द्र द्विवेदी, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जैसे कई लब्धप्रतिष्ठ आचार्यों ने विभाग में अपनी सारस्वत सेवाएँ दी हैं। माननीय कुलपति प्रो. आई. वी. त्रिवेदी के संरक्षकत्व में विभाग उत्तरोत्तर अकादमिक उन्नति कर रहा है। संस्कृत भाषा के संरक्षण, संवर्धन एवं विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना हेतु विभाग सर्वात्मना प्रयत्नशील है।

संगोष्ठी के बारे में

संस्कृत महाकाव्यों की बृहत्त्रयी के अन्यतम महाकवि माघ ने राजस्थान की पुण्यधरा को अपनी उर्वरप्रज्ञा और अनन्य कवित्व से गौरवान्वित किया है। संस्कृत साहित्य में नवीन शब्द प्रयोगों के साथ ही उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य तीनों की जो रमणीय छटा महाकवि माघ की कविता में प्रवाहित होती है वह अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती। राजस्थान संस्कृत अकादमी, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, राजस्थान सरकार, संस्कृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं देव एस.बी.एन. ट्रस्ट, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में माघ पूर्णिमा, 2079 के शुभावसर पर अखिल भारतीय महाकवि माघ महोत्सव का शुभारम्भ किया जा रहा है। महाकवि माघ और सुरभारती को उनके अतुल्य योगदान की स्मृति को समर्पित इस आयोजन में आपका हार्दिक स्वागत है।

किसी भी राष्ट्र की अखण्डता, स्थिरता, सुरक्षा और समृद्धि के लिए राजनैतिक शुचिता एवं सुशासन परम आवश्यक है। राष्ट्र के कल्याण के लिए राजधर्म एवं सुशासन विषय पर पर्याप्त चिन्तन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृत वाङ्मय में हुआ है। ऋग्वेद से लेकर अद्यतन संस्कृत साहित्य में यह चिन्तनपरम्परा नवोन्मेषिता को प्राप्त होती रही है। इस ज्ञान परम्परा में भगवान् श्रीकृष्ण, महर्षि मनु, महर्षि वेदव्यास, आचार्य कौटिल्य, आचार्य शुक्र, आचार्य कामन्दक, आचार्य सोमेश्वर प्रभृति कई राजनीतिविशारद एवं सुशासन-चिन्तक हुए हैं। यह संगोष्ठी भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृत वाङ्मय में विद्यमान राजधर्म एवं सुशासन सम्बन्धी चिन्तन की समीक्षा, समग्र अनुशीलन और व्यापक विश्लेषण के लिए आयोजित की जा रही है। यह आयोजन निम्नलिखित विषयों पर शिक्षकों, शोधकर्ताओं और छात्रों से शोधपत्र आमंत्रित करता है:

संगोष्ठी के विमर्श बिन्दु

- वैदिक गणराज्य एवं सुशासन
- स्मृतिसाहित्य में राजधर्म एवं सुशासन
- आर्षकाव्यों में राजधर्म एवं सुशासन
- महाभारत में प्रतिपादित राजधर्म और सुशासन
- भगवद्गीता और राजधर्म
- प्रमुख पुराणों में राजधर्म एवं सुशासन
- संस्कृत महाकाव्यों / नाटकों / गद्यकाव्यों में राजधर्म एवं सुशासन
- माघकाव्य में राजधर्म एवं सुशासन
- संस्कृत सुभाषित साहित्य में राजधर्म एवं सुशासन
- अर्थशास्त्रीय साहित्य में सुशासन एवं राजधर्म (बृहस्पति, शुक्र, कौटिल्य, कामन्दक, सामेश्वर, चण्डेश्वर आदि आचार्यों के सन्दर्भ में)
- आधुनिक संस्कृत साहित्य और सुशासन
- प्राचीन राजधर्म और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा
- प्राचीन भारतीय लोकप्रशासन और सुशासन
- प्राचीन सुशासन और लोकस्वास्थ्य
- लोककल्याणकारी राष्ट्र की प्राचीन अवधारणा
- प्राचीन सुशासन में कृषककल्याण एवं कृषिव्यवस्था
- प्राचीन आर्थिक प्रशासन के आयाम
- राजधर्म और सतत विकास
- राजधर्म, रामराज्य, ट्रस्टीशिप और महात्मा गांधी
- राजधर्म, सुशासन और मेवाड़ राजवंश
- संस्कृत की अर्थ/वार्ताशास्त्रीय पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण / अध्ययन
- प्राचीन राजधर्म एवं सुशासन सम्बन्धी चिन्तन की वर्तमान प्रासङ्गिकता
- प्राच्य एवं पाश्चात्य प्रशासनिक चिन्तन परम्परा में भेद

संरक्षक

प्रो. आई. वी. त्रिवेदी
माननीय कुलपति
मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर

डॉ. सरोज कोचर
अध्यक्ष
राजस्थान संस्कृत अकादमी

सह संरक्षक

प्रो. सी. आर. सुथार
अधिष्ठाता, वि. सा. वि. मा. म.
मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर

श्री संजय झाला
निदेशक
राजस्थान संस्कृत अकादमी

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. मुरलीधर पालीवाल
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर

संगोष्ठी निदेशक

प्रो. नीरज शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर

संगोष्ठी समन्वयक

डॉ. जी. एल. पाटीदार
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर

निवेदक

श्री देवकरण शर्मा
मुख्य ट्रस्टी,
देव एस.बी.एन. ट्रस्ट, जयपुर

संगोष्ठी-सम्बद्ध आवश्यक निर्देश तथा सूचनाएँ -

- संगोष्ठी-दिनांक - 05,06 फरवरी, 2023
- शोधपत्र का माध्यम संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा हो सकती है।
- शोधपत्र के लिए MS Word, Arial / Times New Roman Unicode Font का प्रयोग किया जाए।
- संगोष्ठी में शोधपत्र वाचन करने हेतु संगोष्ठी के विमर्श बिन्दुओं में से अथवा इनसे सम्बद्ध किसी एक बिन्दु पर अपने मौलिक शोधपत्र का शोध सारांश दिनांक 20 जनवरी, 2023 तक sanskrit@mlsu.ac.in ईमेल आईडी पर प्रेषित करें। शोधसारांश की अधिकतम शब्दसीमा 500 शब्द निर्धारित है।

पंजीयन -

- पंजीयन शुल्क (भौतिक माध्यम) : शिक्षक एवं अन्य 2000 ₹, शोधार्थी - 1500 ₹
- पंजीयन शुल्क (अन्तर्जाल माध्यम) : शिक्षक एवं अन्य 1000 ₹, शोधार्थी - 700 ₹
- पंजीयन प्रक्रिया : संगोष्ठी शोधपत्र चयन समिति दिनांक 20 जनवरी, 2023 तक प्राप्त शोधसारांशों का मूल्यांकन कर संगोष्ठी के योग्य शोधपत्रों का चयन करेगी। इसके पश्चात् समिति द्वारा अनुशंसित शोधसारांश प्रेषकों से संगोष्ठी पंजीयन शुल्क लिया जाएगा।

सम्पर्क

संगोष्ठी-संयोजक
डॉ. मुरलीधर पालीवाल
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
दूरभाष - 9413463594

संगोष्ठी- निदेशक
प्रो. नीरज शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
दूरभाष - 9414292699

संगोष्ठी-समन्वयक
डॉ. जी. एल. पाटीदार
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
मो.ला.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
दूरभाष - 9828043412